राष्ट्रीय सहारा
कानपुर • बुधवार • 27 अक्टूबर • 2021

महिलाएं पुष्प उत्पादन कर बनें आत्मनिर्भर

सीएसए में प्रशिक्षण में मौजूद कृषक महिलाएं। फोटो : एसएनवी

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के प्रसार निदेशालय में कृषक महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दूसरे दिन मंगलवार को पुष्प उत्पादन के माध्यम से कमाई कर आत्मनिर्भर बनने को प्रेरित किया गया। पूर्व प्राध्यापक डॉ. पीएन कटियार ने पुष्पोदन उत्पादन के अंतर्गत गुलाब, रजनीगंधा, गेंदा,चमेली आदि के उत्पादन व विपणन पर विस्तृत चर्चा की तथा इनकी व्यवसायिक खेती पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि फूलों का बहुत बड़ा बाजार है व यह आसानी से बाजार में बिकती है।

गृह विज्ञान विभाग की वैज्ञानिक डॉ. प्रिया वशिष्ठ ने पोषकीय गृह वाटिका प्रबंधन विषय पर कहा कि अपने घरों के आसपास की भूमि पर पोषकीय गृह वाटिका लगाकर वर्ष भर स्वस्थ्य जैविक सब्जी प्राप्त करें। डॉ.पूनम सिंह ने घर पर अनाजों के भंडारण की तकनीक से महिलाओं को अवगत कराया। प्रशिक्षणार्थी कृषक महिलाओं को विवि के सब्जी विज्ञान विभाग के प्रक्षेत्र एवं संरक्षित सब्जी एवं पौध तकनीक पॉली हाउस का भ्रमण भी कराया गया। सब्जी वैज्ञानिक डॉ.राजीव ने उन्हें संबंधित तकनीक की जानकारी दी। डॉ. एसवी पाल व डॉ. आशा यादव के समन्वयन में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भागीदारी कर महिलाओं ने प्रशिक्षण को लेकर काफी उत्साह जता रही हैं।

10 दैनिक जागरण कानपुर, 27 अक्टूबर, 2021

सीएसए की उपलब्धियां नैक के मानक पर करें तैयार

जासं, कानपुर : सारी उपलब्धियां नैक (राष्ट्रीय मूल्यांकन व प्रत्यायन परिषद) के मानकों पर तैयार की जाए। सांस्कृतिक गतिविधियों, खेलकूद, सेमिनार, पूर्व छात्र सम्मेलन जैसे कार्यक्रमों को बढ़ावा दें। मूल्यांकन में ए प्लस ग्रेड प्राप्त करने वाले आठ से दस विश्वविद्यालयों से संपर्क कर उनके अनुभवों व सुझाव के आधार रिपोर्ट बनाएं। यह निर्देश राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि (सीएसए) के कुलपति व अन्य अफसरों को दिए।

वह मंगलवार को राजभवन में सीएसए के नैक के स्वमूल्यांकन रिपोर्ट सुन रहीं थी। उन्होंने कहा कि नैक मूल्यांकन के समय गठित कमेटियां अपने-अपने विषय पर उत्कृष्ट प्रस्तुतीकरण दें। इसके लिए अभी से तैयारी शुरू कर दें। मूल्यांकन में विश्वविद्यालय द्वारा किये गये अनुसंधान और उसका उपयोग ग्रामीण क्षेत्रों में किस सीमा तक हुआ है, इसका विशेष महत्व है। लैब-टू-लैंड कार्यक्रमों को भी बढ़ावा दें। कुलपति डा. डीआर सिंह ने उन्हें गोद लिए बायोफोर्टिफाइड गांव अनूपपुर के कार्यों की जानकारी दी। राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव महेश कुमार गुप्ता, डा. सर्वेंद्र कुमार, डा. मिथिलेश वर्मा, डा. पीके सिंह रहे।

बुधवार • 27.10.2021
अमर उजाला 05

सीएसए में सेमिनार-रोजगार मेले लगाए जाएं

कानपुर। नैक मूल्यांकन को लेकर सारी तैयारियां पूरी कर ली जाएं। विवि की उपलब्धियों को नैक के मानकों पर ही तैयार किया जाए। मूल्यांकन में विवि द्वारा किए गए अनुसंधान और उनका उपयोग ग्रामीण क्षेत्रों में किस सीमा तक हुआ है, इसका विशेष महत्व है। यह बात राज्यपाल एवं कुलाधिपति आनंदीबेन पटेल ने सीएसए के कुलपति डॉ. डीआर सिंह व अन्य अधिकारियों से कही। मंगलवार को राजभवन में सीएसए के राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (नैक) के स्वमूल्यांकन रिपोर्ट को देखकर उन्होंने कहा कि विवि में सांस्कृतिक गतिविधियों, खेलकूद, सेमिनार, पूर्व छात्र सम्मेलन, रोजगार मेले जैसे कार्यक्रमों को बढ़ावा दें। कमेटी बनाकर उपलब्धियों का डाटा संकलित कराएं। (संवाद)

डॉ. भारत बने मूल्यांकन कमेटी के चेयरमैन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विभाग के पूर्व प्रोफेसर डॉ. भारत सिंह को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने स्वायत्तशासी कॉलेज के मूल्यांकन के लिए गठित पांच सदस्यीय कमेटी का चेयरमैन बनाया है। डॉ. सिंह पूर्व में भी महाराष्ट्र एवं तमिलनाडु के कॉलेजों के स्वायत्तशासी होने का मूल्यांकन कार्य संपादित कर चुके हैं। वह उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग के सदस्य, राज ऋषि भर्तहरि मत्स्य विश्वविद्यालय अलवर और वर्धमान महावीर ओपन विश्वविद्यालय कोटा में कुलपति रह चुके हैं। (संवाद)

राष्ट्रीय सहारा
कानपुर • बुधवार • 27 अक्टूबर • 2021

सीएसए लेगा यूपीटीटीआई की मदद

अलसी के रेशे से बनाएंगे कपड़े

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि अलसी के रेशे से तैयार किये गये धागों से कपड़े तैयार करने में उप वस्त्र प्रौद्योगिकी संस्थान (यूपीटीटीआई) की मदद लेगा। इस पर शीघ्र ही दोनों संस्थानों के बीच करार किये जाने की तैयारी है। अलसी के रेशे से तैयार धागों की मदद से तैयार कपड़े पहनने में आरामदायक होंगे। धूल व गंदगी का जमाव भी कम होगा व पसीने के दुर्गंध से भी छूटकारा मिलेगा।

> अलसी के रेशे से धागा बनाने की सीएसए की शिक्षक की तकनीक को राज्यपाल ने भी था सराहा

कृषि विवि के गृह विज्ञान विभाग में वस्त्र एवं परिधान विभाग की शिक्षिका प्रो. रितु पांडेय ने अलसी के डंठल से निकले रेशे से धागा तैयार करने में सफलता पायी है। उन्होंने इस अपनी तकनीक का पेटेंट भी कराया है। वह लेमन घास व हाथी घास सहित अन्य फसलों के रेशे से भी धागा तैयार करने पर काम कर रही हैं। अलसी से रेशे तैयार में करने में पारंपरिक तरीके से करीब सप्ताहभर लगते हैं, लेकिन रितु ने विशेष जैल का प्रयोग कर चार घंटे में रेशे तैयार करने में सफलता पायी है। सीएसए विवि प्रबंधन की ओर से अलसी के रेशे से धागा तैयार करने की तकनीक की जानकारी पिछले दिनों राजभवन में राज्यपाल आनंदीबेन पटेल को भी दी गई थी, जिसकी उन्होंने सराहना कर कार्य को आगे बढ़ाने को कहा था। विवि कुलपति प्रो. डीआर सिंह ने भी रितु पांडेय की तकनीक को सराहा व इस कार्य का आगे बढ़ाने के लिए यूपीटीटीआई से सहयोग हासिल करने के प्रस्ताव को स्वीकृत किया है। अलसी के रेशे से धागा व कपड़े तैयार करने पर अनुसंधान करने वाली रितु पांडेय का कहना है कि अलसी से रेशे, धागा व कपड़ा तैयार करने सफलता मिली है। इन दिनों वह अलसी के रेशे से बिना बुनाई वाले कपड़े नॉन वूवेन क्लाथ तैयार करने पर प्रयोग कर रही हैं। वह अलसी के रेशे से कपड़े बनाने को फाइबर पर काम कर रही हैं।